

बच्चों में मूल्यबोध एवं शिक्षण प्रक्रिया

(उच्च प्राथमिक हिंदी एवं संस्कृत)

शिक्षा का उद्देश्य बच्चे का सर्वांगीण विकास करना है। सर्वांगीण अर्थात् बौद्धिक, शारीरिक, मानसिक, नैतिक सभी तरह के गुणों का विकास। एक शिक्षक अपनी शिक्षण प्रक्रिया में सभी बातों को शामिल करें जो बच्चों को विषय ज्ञान के साथ-साथ उसके व्यक्तित्व का भी विकास कर सकें। सामान्यतः एक शिक्षक अपनी कक्षा का संचालन अर्जित कौशल एवं अनुभव के आधार पर करता है। शिक्षण करने के उपरान्त यदि शिक्षकों से बातचीत की जाए कि क्या उन्होंने अपने कक्षा- शिक्षण के दौरान बच्चों को केवल विषय ज्ञान ही दिया या विषय ज्ञान के साथ-साथ बच्चों के व्यक्तित्व विकास पर भी कार्य किया, जो बच्चों में मूल्यबोध एवं नैतिकता को भी विकसित कर रहा है। इस बिंदु पर शिक्षक अपनी समस्त क्रियाकलापों/ प्रक्रियाओं के आधार पर अपने विचार रखेंगे।

निश्चित रूप से जब एक शिक्षक कक्षा- शिक्षण के लिए बच्चों के साथ होता है तो उसका अपना व्यक्तित्व बच्चों को प्रेरित करता है। शिक्षक के द्वारा प्रयोग की जाने वाली बातचीत की शैली, कार्य व्यवहार, नियोजन, विषय वस्तु का ज्ञान, संप्रेषण क्षमता, हाव-भाव तथा विषय वस्तु का प्रस्तुतीकरण बच्चों के संज्ञानात्मक पक्ष के साथ-साथ सह संज्ञानात्मक पक्ष के विकास के लिए अहम भूमिका अदा करता है। शिक्षण के दौरान यह भी ध्यान रखना है कि हम बच्चों को संबोधित कैसे करते हैं? संबोधन में आदर का भाव अति आवश्यक है।

शिक्षक को बच्चों की आवश्यकता के अनुसार समता व समानता का भाव रखना चाहिए। कक्षा- शिक्षण के दौरान जब प्रश्न पूछे जाएं तो यह ध्यान रखना चाहिए कि कब सामूहिक प्रश्न कया जाए व कब व्यक्तिगत रूप से। शिक्षक से अपेक्षा की जाती है कि वह अधिकांश स्थितियों में प्रश्न पूरी कक्षा के समक्ष करें, जिससे सभी को उत्तर देने का अवसर मिले। जिन छात्रों को उत्तर आ रहा हो उन्हें हाथ उठाने के लिए कहें तथा किसी एक या दो छात्रों को उत्तर देने का अवसर देकर विषय की ग्राह्यता की पुष्टि कर लें। इस प्रक्रिया से सभी हाथ उठाने वाले बच्चों में आत्म विश्वास की भावना का विकास होगा कि वे सही उत्तर जान रहे थे। जिन बच्चों ने हाथ नहीं उठाया था वे भी उत्तर से परिचित हो जाएंगे, साथ ही उनमें उत्तर न बता पाने का भय भी नहीं रहेगा। इस प्रकार शिक्षक भयमुक्त वातावरण बनाकर कक्षा शिक्षण कराएंगे तो छात्रों की उपस्थिति भी बढ़ेगी। कक्षा से सही उत्तर मिलने पर छात्रों को पुनर्बलित अवश्य कया जाए क्योंकि छात्रों के द्वारा किए गए अच्छे कार्यों की प्रशंसा करने से उनमें आत्म विश्वास जैसे मानवीय मूल्य का विकास होता है। कक्षा में जब शिक्षक समूह कार्य कराते हैं तो उससे छात्रों में नेतृत्व क्षमता, सहयोग, दूसरे के विचारों का सम्मान, ईमानदारी जैसे गुणों का विकास होता है। शिक्षक के द्वारा कराई जाने वाली इस प्रकार की समस्त गतिविधियां छात्रों में नैतिक विकास में सहायक होती हैं। साथ ही उनमें उत्तर न बता पाने का भय भी नहीं रहेगा। इस प्रकार शिक्षक भयमुक्त वातावरण बनाकर कक्षा शिक्षण कराएंगे तो छात्रों की उपस्थिति भी बढ़ेगी कक्षा से सही उत्तर मिलने पर छात्रों को पुनर्बलित अवश्य कया जाए क्योंकि छात्रों के द्वारा किए गए अच्छे कार्यों की प्रशंसा करने से उनमें

आत्म विश्वास जैसे मानवीय मूल्यों का विकास होता है कक्षा में जब शिक्षक समूह कार्य कराते हैं तो उससे छात्रों में नेतृत्व क्षमता, सहयोग, दूसरे की वचारों का सम्मान, ईमानदारी, धैर्य जैसे गुणों का विकास होता है। शिक्षक के द्वारा कराई जाने वाली इस प्रकार की समस्त गति व ध्यां छात्रों में मूल्यबोध करा कर नैतिक विकास में सहायक होती हैं।

अतः सर्वप्रथम एक शिक्षक को अपने शिक्षण प्रक्रिया में निम्न लखत बातों को सम्मिलित करना चाहिए ----

- शिक्षक की बात करने की शैली एवं हाव-भाव
- शिक्षक का पहनावा
- शिक्षक का स्वयं का व्यवहार
- शिक्षक का संप्रेषण
- शिक्षक के तौर-तरीके

इन सारी बातों का प्रभाव कक्षा-कक्ष के बच्चों पर पड़ता है। खासकर उनके नैतिक मूल्यों का विकास करने में। अतः शिक्षक कक्षा में वषय ज्ञान के साथ-साथ अनेक मूल्यों के साथ उपस्थित होता है। जैसे कक्षा में प्रवेश करते ही अभिवादन (शष्टाचार की भावना का विकास), मुस्कुरा कर अपनी शुरुआत अर्थात् (अपनापन का मूल्य) बीच-बीच में सकारात्मक टिप्पणी अर्थात् (बच्चों में विश्वास की भावना का विकास) सभी बच्चों की तरफ ध्यान देना (आत्मीयता की भावना) शिक्षक द्वारा अपने रजिस्टर एवं शिक्षण सामग्री उचित स्थान पर रखना (अनुशासन) मल जुलकर काम करना (टीम भावना का विकास) जैसे मूल्यों का विकास बिना कहे बच्चों में चला जाता है। अतः शिक्षण

प्रक्रिया में सबसे प्रमुख बात शिक्षक स्वयं एक आदर्श रूप में बच्चों के सम्मुख प्रस्तुत हों क्योंकि मूल्य बताकर या पढ़ाकर कम बर्तन व्यवहार में परिलक्षित करने पर ज्यादा बर्तन होते हैं।

नमता सिंह, वाराणसी

